देवताओं का वृक्ष देवदार

एन. के. बौहरा व प्रदीप चौधरी

देवदार जिसे कश्मीर में दिआर और हिमाचल में कैलोन कहते हैं पर्वतीय प्रदेश का एक पवित्र व पूजनीय पेड़ है। इसका नाम दो शब्दों देव (देवता) व डारू (वृक्ष) से मिलकर बना है। प्राचीन संस्कृत अभिलेखों में देवादारू या देओदारू नाम से इस वृक्ष का उल्लेख मिलता है। देवदार को अंग्रेज़ी में इंडियन या हिमालयन सिकार कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम *सिड्रस देवदारा* (रॉक्सबर्गी) है। सिड्रस का उद्‌गम ग्रीक शब्द केडरॉस से हुआ है जिसका अर्थ है- कोनीफर अर्थात शंकु वाले पादप। यह वृक्ष बहुत ही खूबसूरत होता है। उच्च गुणवत्ता की लकड़ी के रूप में भी इसका अपना एक विशिष्ठ स्थान है। इसकी लकड़ी का उपयोग मुख्यतः मंदिरों तथा बड़े और खास घरों के निर्माण में होता आया है। पहले राष्ट्रीय स्तर पर रेल्वे स्लीपर बनाने में इसकी लकड़ी का उपयोग किया जाता था लेकिन अब इसकी जगह कॉन्क्रीट ने ले ली है।

देवदार सदा हरा रहने वाला तथा गहरी हरी पत्तियों वाला आकर्षक वृक्ष है। इसकी चमकीली तथा नुकीली पत्तियां इसकी सुन्दरता को और बढ़ा देती हैं। इसका शंकु के आकार का शीर्ष, वृक्ष की आयु बढ़ने के साथ-साथ गोल, चौड़ा और चपटा हो जाता है जिसमें से शाखाएं फैलती जाती हैं। कभी-कभी इसका शीर्ष तेज़ हवा या बर्फ गिरने से चपटा हो जाता है। जब वृक्ष पूर्णतः परिपक्व हो जाता है तो उसकी लम्बाई 40 मीटर तक हो जाती है। इस वृक्ष की छाल पतली, हरी होती है जो धीरे-धीरे गहरी भूरी होती जाती है तथा इसमें दरारें पड़ जाती हैं। इसकी पत्तियों की उम्र 2 से तीन साल तक होती है। एक विख्यात वानिकी विशेषज्ञ दल ने 1914 में कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) में एक चट्टान पर उगे एक वृक्ष की मोटाई 6 मीटर तक नापी जबकि इसकी ऊंचाई लगभग 52 मीटर थी। देवदार के 72 मीटर तक ऊंचे होने की जानकारी है। इसी प्रकार एक 700 वर्ष पुराने देवदार के तने की एक काट फॉरेस्ट रिसर्च इंस्ट्टियूट देहरादून के टिम्बर म्यूज़ियम में रखी हुई है।

देवदार के प्राकृतिक वन सम्पूर्ण पश्चिमी हिमालय में अफगानिस्तान से लेकर गढ़वाल (उत्तरप्रदेश) के पूर्वी भाग तक फैले हैं। वर्तमान में यह उत्तरप्रदेश के कुमांऊ क्षेत्र तक अपना प्राकृतवास बना चुका है। यह आंतरिक शुष्क तथा बाहरी आर्द्र मॉनसून वाले हिमालयी क्षेत्रों में उग सकता है। देवदार समुद्र तल से 1200 से 3000 मीटर तक की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में उग सकता है। इस वृक्ष की अधिकतम वृद्धि ठण्डे प्रदेशों में समुद्र तल से लगभग 1800-2600 मीटर ऊंचाई पर पाई गई है। भारत में देवदार के वन हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर तथा उत्तरप्रदेश में पाए जाते हैं।

देवदार के वनों का कुल क्षेत्र लगभग 2,03, 250 हेक्टेयर के है जो हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश में फैला हुआ है। देवदार के घने वृक्ष मुख्यतः 100 से 1800 मि.मी. वर्षा वाले तथा -12° सेल्सियस (न्यूनतम) से 38 डिग्री सेल्सियस (अधिकतम) तक के तापमान वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये वृक्ष कई अन्य पादपों के साथ पाए जाते हैं। इनमें मुख्य हैं बनाफशा (*वायोला कैनिसेन्स*) झाड़ी या आइवी (*हेडेरा हेलिक्स*) प्रतान, रस्पबेरी (*रूबस*) प्रजाति, जंगली